वार्षिक 150/- रुपये | अगस्त 2024 | वर्ष 26 | अंक 10 | पृष्ठ - 28 | मूल्य 15/-रु.

# गोसम्पदा

## स्वाधीनता दिवस, रक्षाबंधन और श्रीकृष्ण जन्माष्टमी की

## हार्दिक मंगलकामनाएं

## गोमाता हैं राष्ट्र के सतत् विकास का आधार

## सम्पादकीय

### गोविज्ञान परीक्षा देश के सभी विद्यालयों -महाविद्यालयों में अनिवार्य

# गोमाता हैं राष्ट्र के सतत् विकास का आधार

दुर्भाग्य से या कहें अज्ञानतावश धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक, आरोग्य और वैज्ञानिक दृष्टि से गाय के महत्व को भुला दिया गया और उसकी उपेक्षा की गई। दुष्परिणामस्वरूप आज गाय के अस्तित्व पर ही संकट आ गया है। वास्तव में सनातन वैदिक धर्म एवं संस्कृति का मूल और मानव–जीवन का आधार गोमाता ही हैं। भारतीय संस्कृति मूलतः गौ आधारित संस्कृति है और हमारे देश में प्राचीनकाल से ही गाय एवं गोवंश के प्रति पूज्य भाव रहा है। वेदवाणी – ***"गौ मे माता, ऋषभः पिता मे"*** के अनुरूप भारतवासी सदा से ही गाय को माता के रुप में पूजते आये हैं। इसी कारण से शास्त्रों में भारतभूमि को अति पवित्र–पावन माना गया है।

इसीलिए प्रारम्भ से ही भारतीय शासकों ने अपनी दूरदर्शिता के आधार पर गोवंश–हत्या पर पूर्ण प्रतिबन्ध रखा। पर बाद में विदेशियों के शासनकाल में इस प्रतिबन्ध पर शिथिलता आने लगी और गोवंश–हत्या का पाप प्रारम्भ हो गया, जो आज तक किया जा रहा है। देश में गोहत्या का कलंक मिटाने के लिए ही 1857 की क्रांति के पश्चात ही स्वाधीनता–संग्राम शुरू हुआ। तदुपरांत स्वाधीनता–संग्राम के प्रमुख कर्णधारों ने एक स्वर में घोषणा की कि ***"स्वराज्य प्राप्त होते ही गोहत्या का कलंक सबसे पहले मिटाया जायेगा"***, लेकिन दुर्भाग्य से स्वराज्य प्राप्ति के बाद गोहत्या–बंदी कानून बनने की आशा क्षीण होने लगी। निराश होकर देश की जनता, बुद्धिजीवियों, अनेक सामाजिक–सांस्कृतिक संस्थाओं और संत–महात्माओं ने अहिंसात्मक आन्दोलन – सत्याग्रह–प्रदर्शन किये। हजारों लोगों ने जेल की यातनाएं सहीं और सैकड़ों गोभक्तों ने बलिदान दिया, जो इस देश का अविस्मरणीय इतिहास बन गया। परम पूजनीय गोलवलकर जी (गुरुजी) के मार्गदर्शन में सन 1952 में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की प्रतिनिधि सभा में गोहत्या बन्दी कानून बनाने के संदर्भ में एक विशेष प्रस्ताव पारित हुआ। तत्पश्चात संघ ने संपूर्ण देश में हस्ताक्षर अभियान चलाया और 8 दिसम्बर, 1952 को श्री गुरुजी लाला हंसराज गुप्त को साथ लेकर राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जी से मिले और उन्हें लगभग पौने दो करोड़ से अधिक हस्ताक्षरों द्वारा समर्थित ज्ञापन दिया, जिसमें गोहत्या पर विधानतः प्रतिबन्ध लगाने का अनुरोध किया गया था। उल्लेखनीय है कि हस्ताक्षर संग्रह पर मुस्लिम और ईसाई बन्धुओं ने भी हस्ताक्षर किये थे। इतना सब होने के बाद भी स्वतंत्रता मिले लगभग 77 वर्ष बीत गये, परन्तु भगवान राम–कृष्ण और बुद्ध, महावीर, गुरु नानक की इस पावन भूमि पर आज तक गोरक्त गिरना बंद नहीं हुआ। अभी भी गोवंश–हत्या और गोमांस भक्षण निरंतर जारी है।

स्मरण रहे, भारत एक आध्यात्मिक देश है। अनादिकाल से ही यहां परमार्थ की प्रधानता रही है और आज भी है। इसीलिए किसी भी प्राणी को कष्ट देना अथवा उसकी हत्या करना अधर्म–पाप माना गया है। जहां तक गाय का प्रश्न है तो प्रारम्भ से ही हमारे ऋषि–मुनियों ने गाय (देशी) को संसार का सर्वश्रेष्ठ प्राणी माना और उसे ***"विश्व की माता (गावो विश्वस्य मातरः)"*** कहकर सम्मानित किया तथा उसकी अर्चना–वन्दना की।

अतः गोमाता–गोवंश के महान योगदान को देखते हुए उनके संरक्षण–संवर्धन के लिए लगभग 15 वर्षों से ***"गोविज्ञान परीक्षा"*** के माध्यम से एक नूतन प्रयोग प्रारम्भ किया गया है। वर्तमान में शिक्षा पाठ्यक्रमों में गाय के सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की जानकारी उपलब्ध नहीं है, इसीलिए विद्यालयों–महाविद्यालयों के माध्यम से विद्यार्थियों को देशी गोवंश के माहात्म्य की सही–सही और संपूर्ण जानकारी उपलब्ध कराने के उद्देश्य से ही यह परीक्षा प्रतिवर्ष देश के अनेक राज्यों में गोरक्षा विभाग, विश्व हिन्दू परिषद द्वारा आयोजित कराई जाती है। इस वर्ष यह परीक्षा आगामी 26 अक्टूबर को आयोजित कराई जाएगी। इस परीक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों सहित सभी गोभक्तों में जागरूकता आने के साथ ही गाय के प्रति आस्था और श्रद्धा बढ़ रही है। इसलिए सभी देशवासियों को देशी गोवंश के दिव्य और वैज्ञानिक गुणों की जानकारी होना नितान्त आवश्यक है ताकि प्रत्येक नागरिक गोमाता–गोवंश की सेवा–रक्षा करने के लिए उद्यत हो उठे। इस संदर्भ में हमारा करबद्ध निवेदन है कि केन्द्र सरकार और राज्य सरकारों का भी राष्ट्रहित में यह उत्तरदायित्व है कि वे देश के सभी विद्यालयों एवं महाविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में गाय के सामाजिक–आर्थिक–औषधीय एवं वैज्ञानिक पक्ष को शामिल करें।

वस्तुतः गोमाता–गोवंश (पंचगव्य) राष्ट्र के सतत् विकास का सर्वाधिक महत्वपूर्ण आधार है, क्योंकि पंचगव्य अर्थात दूध, दही, घी, गोमूत्र एवं गोबर (गोमय) औषधीय और अलौकिक गुणों से भरपूर हैं। इसका वर्णन वेदों एवं आयुर्वेद ग्रंथों में सर्वत्र प्रचुरता से किया गया है। और आज–कल पंचगव्य औषधियों का संपूर्ण देश में व्यापक स्तर पर उपयोग भी किया जा रहा है। इस दृष्टि से गोवंश संरक्षण–संवर्द्धन करना देश के सभी नागरिकों का राष्ट्रीय कर्तव्य है।

**(सम्पादक)**

# गोसम्पदा

वर्ष - 26 अंक-10 अगस्त - 2024 पृष्ठ - 28

**संरक्षक :**
**हुकुमचंद सावला जी**

**अखिल भारतीय गोरक्षा प्रमुख**
**दिनेश उपाध्याय जी**
संकट मोचन आश्रम, सै. 6,
रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली-22
मो. : 9644642644
ईमेल : gosampada@gmail.com

**सम्पादक :**
**देवेन्द्र नायक**
संकट मोचन आश्रम, सै. 6,
रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली-22
मो. : 8130049868 कार्या. 011-26174732
ईमेल : gosampada@gmail.com

**परामर्शदाता : प्रो. गुरुप्रसाद सिंह जी**
मो. : 9838900596

**प्रकाशक : राजेन्द्र प्रसाद सिंहल जी**
मो. : 9810055638

**प्रचार-प्रसार प्रमुख :** जय प्रकाश गर्ग जी
मो. : 9654414174

**व्यवस्थापक : रामानन्द यादव**
मो. : 9958710672 कार्या. : 011-26174732

**साज-सज्जा : सुमन कुमार**

**वैधानिक सूचना**
'गोसम्पदा' से संबन्धित सभी वाद प्रकाशन तिथि से 3 माह के अंदर केवल नई दिल्ली स्थित न्यायालय में मान्य होंगे

**सहयोग राशि**
एक प्रति : रु. 15/-
वार्षिक : रु. 150/-
आजीवन : रु. 1500/-

**अनुक्रमणिका**


| विषय | पृष्ठ |
|---|---|
| गोवंश है हमारा धार्मिक, सामाजिक और आर्थिक आधार | 04 |
| गोवंश-संरक्षण हेतु विभिन्न मंत्रालयों में समन्वय आवश्यक | 06 |
| गोमाता-गोवंश का संरक्षण-संवर्द्धन अनिवार्य | 09 |
| गोमाता की पीड़ा हरने वाले सिद्धपुरुष 'तिरुमूलर' | 11 |
| वर्षाऋतु और पंचगव्य | 14 |
| गाय को माता मानने का वैज्ञानिक आधार | 16 |
| बिहार ले जा रहे 160 गोवंश मुक्त करवाए गए | 20 |
| गो सेवकों-गो रक्षकों की छत्तीसगढ़ मुख्यमंत्री से भेंट | 21 |
| अब गोवंश तस्करी में पकड़े गये वाहन तीन माह तक रहेंगे जब्त | 22 |
| Govansh Hatya - Article 48 | 23 |
| How can we Develop Adoration Towards Cows in Current Generation Children? | 24 |


## हार्दिक निवेदन

सभी गोभक्त–गोप्रेमी बंधुओं से करबद्ध अनुरोध है कि वे इस पत्रिका का सदस्य अवश्य बनें और अन्य गोभक्तों को भी सदस्य बनायें। कृपया सभी लोग अपना वार्षिक अथवा आजीवन सदस्यता शुल्क निम्नलिखित बैंक व खाता नंबर में जमा कराएं–

**पंजाब नेशनल बैंक, बसंत लोक, नई दिल्ली**
**खाता नम्बर - 04072010038910**
**IFSC CODE : PUNB0040710**

नोट : शुल्क **"भारतीय गोवंश रक्षण संवर्द्धन परिषद"** के नाम पर जमा करें। सम्पर्क सूत्र : 011–26174732

हरिशंकर दीक्षित 'पथिक'

# गोवंश है हमारा
# धार्मिक, सामाजिक और आर्थिक आधार

मेरे घर में बगल में खाली प्लाट है। अमलताश का एक पेड़ इसमें शोभित है। इसकी छाया में रेडियो पर आदरणीय प्रधानमंत्री जी के **'मन की बात'** कार्यक्रम सुनने के लिए बैठा था। मुझे बैठा देखकर कुछ छुट्टा गोवंश भी आ गये। मकई के भुट्टों के छिलके आदि जो मैं प्रायः इनके लिए सब्जी मण्डी से लाता हूँ, घर से शीघ्र ले आया और इनके आगे डाल दिया। प्रधानमंत्री जी ने बोलना प्रारम्भ किया। मैं ध्यान से सुनता रहा। छिलके खाते हुए गोवंश प्रायः रेडियो की आवाज पर ध्यान दे रहे हैं, ऐसा मुझे आभास हो रहा था। प्रधानमंत्री जी ने मन की बात में अन्य बातों के साथ बाघों–शेरों का वर्णन करते हुए मनुष्य से इनकी समीपता और सम्बन्ध पर चर्चा करते हुए इनके संरक्षण की बात की, किन्तु मनुष्य के परम हितैषी और आजीविका के आधार गोवंश की सुरक्षा–संरक्षा पर एक वाक्य भी नहीं कहा।

ध्यान देने की बात है कि प्रधानमंत्री जी उन तपस्वी जनों द्वारा शिक्षित–उत्प्रेरित हुए हैं जो परम् गोभक्त–रक्षक थे और इन्होंने भी उसी प्रकार तप किया है जैसे इनके गुरुजनों ने किया है। **''गो मे माता वृषभः पिता मे''** मन्त्र का पाठ प्रधानमंत्री जी भी करते रहे हैं। गोवंश के आशीर्वाद से ही यह देश–समाज की सेवा करने के लिये सर्वोच्च आसन प्रतिष्ठित हो सके हैं। आश्चर्य है कि **'गाय हमारी माता है जनम–जनम का नाता है''** जैसे यथार्थ उद्घोष करने वाले हमारे प्रधानमंत्री जी गोवंश की दुर्दशा पर मौन हैं। हमारी पूर्व सरकारों की भाँति ही वनज–ह्विन्स पशुओं के संरक्षण पर अरबों रूपये व्यय करने वाले गोभक्त प्रधानमंत्री को गाय को घास खिलाते हुए टी.वी. पर तो देखा है किन्तु गोवंश के हित में वांछित–उचित कदम उठाते नहीं देखा–सुना है।

आखिर प्रधानमंत्री जी गोवंश की दशा सुधारने का प्रयास क्यों नहीं कर पा रहे हैं, इस पर मैंने बहुत गहनता से विचार किया। इससे जो तथ्य प्राप्त हुआ वह सत्य के सर्वथा निकट है। वह तथ्य यह है कि प्रधानमंत्री जी भली–भाँति जानते हैं कि कलहलों से जुतायी करके रासायनिक उर्वरकों तथा खर–

**आदरणीय प्रधानमंत्री जी, बैलों से खेती करने के लिये किसानों को प्रति बैल अतिरिक्त सम्मान निधि देकर और तकनीशियनों को आर्थिक सहायता देकर उन्नत कृषि यन्त्रों के निर्माण हेतु प्रोत्साहित किया जा सकता है। ऐसा करने से किसान रूष्ट होने के स्थान पर प्रसन्न ही होंगे। इससे हमारा देश खनिज तेल के अवश्यम्भावी भीषण संकट से उबरने में सक्षम होगा और साथ–ही–साथ हमारे कृषि क्षेत्र में कृषि कार्यों से होने वाले प्रदूषण में भारी कमी आयेगी।**

पतवारनाशी रसायनों का उपयोग करते हुए अत्यल्प परिश्रम से खेती करने वाले किसान अब कठोर परिश्रम करते हुए बैलों से जुतायी करके सिर पर गोबर खाद ढोकर जैविक खेती नहीं करेंगे। ऐसी प्रेरणा देने से किसान नाराज हो जायेंगे और विरोधियों को उन्हें भड़काने का एक बड़ा अवसर भी मिल जायेगा। इस प्रकार वे सत्ताच्युत भी हो सकते हैं और इससे देशहित में किये जाने वाले अन्य कार्य भी नहीं किये जा सकेंगे। प्रधानमंत्री जी आज के वैश्विक हालात को देखते हुए पहले देश को आर्थिक–राजनीतिक आधार पर मजबूत बनाना चाहते हैं जिससे हमारा देश अपने शत्रुओं पर अंकुश लगाकर उन्हें अपनी सीमा में रहने पर विवश करता रहे। ऐसा होने से ही हमारे देश का सर्वांगीण विकास सम्भव है। यह तथ्य मेरे गहन चिन्तन – मंथन का निष्कर्ष है। इसमें त्रुटि की सम्भावना लगभग नहीं ही है।

गोवंश की वर्तमान दुर्दशा उसे विलुप्ति की कगार पर पहुँचा रही है। पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, उत्तर प्रदेश और बंगाल जैसे राज्यों में तो बैलों से खेती करने वाले किसान अँगुलियों पर गिने जा सकते हैं। हल जोतने की कला के मर्मज्ञ किसान आज इन प्रदेशों में खोजने पर बिरले ही मिलेंगे। अतः इस कला को बचाना हमारे लिये परम आवश्यक है। **'रहिमन देखि बड़ेन को लघु न दीजिये डारि।'** उपदेश हमें याद रखना चाहिये। आज के संसार की राजनीतिक दशा ऐसी है कि कभी भी विश्व युद्ध हो सकता है। उस समय खनिज तेल की उपलब्धि की दशा पर विचार करना परमावश्यक है। यदि हम गम्भीरता से विचार करें तो हम

उपरोक्त उपदेश के कल्याणकारी भावार्थ को भलीभाँति समझकर फिर से गोवंश द्वारा खेती करना प्रारम्भ कर सकते हैं। फिर से परम्परागत बैल आधारित कृषि हेतु हमें बैलों की आवश्यकता होगी। बैल तैयार होने तक बछड़े को तीन वर्ष का समय लगता है। दो–ढाई वर्ष के बछड़ों को बधिया कर 6 माह तक प्रशिक्षित करना पड़ता है।

अतः मैं इस लेख के माध्यम से प्रधानमंत्री जी से आग्रहपूर्वक प्रार्थना करना चाहता हूँ कि देश की सरकारी या स्वयंसेवी गौशालाओं में उपयुक्त बछड़ों को बधिया कर जुतायी का प्रशिक्षण देकर बैल बनाने का कार्य करने हेतु उन्हें उचित सहायता रूप में कुछ भूमि उपलब्ध करायें। गोशाला हेतु चारा–दाना इस भूमि में बैलों द्वारा जुतायी करके उपजाया जाये। साथ ही परम्परागत हलों को और अधिक उन्नत करते हुए पाँच फाल वाला हल बनाया जाय जो तीन फालों के हल से प्रथम जुतायी के बाद उन्हीं बैलों द्वारा सुगमता से खींचा जा सकता हो। हमारे तकनीशियन ट्रैक्टर जैसा बैल चालित यन्त्र बना सकते हैं जिसे चार बैल सरलता से खींच सकें और हलवाहा उस पर बैठकर बैलों को नियंत्रित कर सके। इससे बैलों के पीछे चलने का श्रम भी नहीं करना पड़ेगा। इससे लघु और सीमान्त कृषकों को अच्छा लाभ होगा।

आदरणीय प्रधानमंत्री जी, बैलों से खेती करने के लिये किसानों को प्रति बैल अतिरिक्त सम्मान निधि देकर और तकनीशियनों को आर्थिक सहायता देकर उन्नत कृषि यन्त्रों के निर्माण हेतु प्रोत्साहित किया जा सकता है। ऐसा करने से किसान रूष्ट होने के स्थान पर प्रसन्न ही होंगे। इससे हमारा देश खनिज तेल के अवश्यम्भावी भीषण संकट से उबरने में सक्षम होगा और साथ–ही–साथ हमारे कृषि क्षेत्र में कृषि कार्यों से होने वाले प्रदूषण में भारी कमी आयेगी। ग्रामीण पलायन कम होगा और सबसे बड़ी बात हमारे माता–पिता तुल्य गोवंश हमारे परिवार का अंग बनकर, पुनर्प्रतिष्ठित होकर विलुप्त होने से बचकर हमें आशीर्वाद देगा। इसके फलस्वरूप हमारा देश फिर विश्व में प्रतिष्ठित होकर खोये हुए गौरव को प्राप्त करेगा।

राजीव गुप्ता, आई.ए.एस (सेवानिवृत्त)

# गोवंश-संरक्षण हेतु विभिन्न मंत्रालयों में समन्वय आवश्यक

सरकार का ध्यान दुग्ध उत्पादन बढ़ाने के उद्देश्य से मुख्यतः गोवंश की नस्ल सुधार पर ही केंद्रित रहा है। गोबर–गोमूत्र का सदुपयोग व बैलों की कर्षण शक्ति के उपयोग के प्रयास अधिकांशतः व्यक्तिगत संस्थाओं के स्तर पर ही सीमित रहे हैं। सरकार के विभिन्न मंत्रालयों द्वारा इनके विषय में समन्वित कार्रवाई की जानी आवश्यक है ताकि व्यापक स्तर पर इनका उपयोग हो सके व तदनुसार गोवंश व किसान की आर्थिकी में अपेक्षित सुधार आ सके। इसके साथ ही सस्ते भूसे–चारे की व्यवस्था होने पर कोई भी गोवंश अनुपयोगी नहीं रहेगा व किसान की आर्थिकी में उसका महत्वपूर्ण योगदान होगा। पशुपालन मंत्रालय द्वारा विभिन्न मंत्रालयों व राज्य सरकारों से मुख्यतः निम्न बिंदुओं पर समन्वय किया जाना अपेक्षित है :

### कृषि मंत्रालय

1. प्राकृतिक खेती में अधिकाधिक गोबर व गोमूत्र के उपयोग के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा अनुसंधान एवं विकास तथा विभिन्न मृदा श्रेणियों के लिए गोबर व गोमूत्र आधारित जैविक कृषि की व्यवस्थाएं निर्गत कराना।
2. जो किसान कृषि उत्पादन कम होने की आशंका से एकदम शत प्रतिशत जैविक कृषि न अपनाना चाहें, उनके लिए रासायनिक खाद/कीटनाशक के उपयोग की मात्रा कम करते हुए गोबर/गोमूत्र आधारित खाद/कीटनाशक के भी उपयोग की व्यवस्थाएं निर्गत कराना।
3. ऊसर व अन्य अवनत भूमियों के रिक्लेमेशन के लिए गोबर व गोमूत्र के प्रयोग हेतु अनुसंधान एवं विकास तथा उनके उपयोग की व्यवस्थाएं निर्गत कराना।
4. राज्यों के कृषि प्रसार अधिकारियों/कर्मचारियों का उपरोक्त विधाओं में प्रशिक्षण एवं उनके माध्यम से व्यापक प्रचार–प्रसार की व्यवस्था कराना।
5. गेहूं के भूसे की भांति श्रीअन्न के भूसे का संग्रहण व उसका पशु आहार हेतु उपयोग व अन्य कृषि उत्पादों के अवशेषों का भी संग्रहण, प्रसंस्करण एवं यथासंभव पशु आहार हेतु उपयोग।

6. उपयुक्त लंबाई वाली खाद्यान्न प्रजातियों का विकास, ताकि खाद्यान्न के साथ ही भूसा भी पर्याप्त मात्रा में मिले।
7. उन्नत बैल चालित कृषि यंत्रों का विकास एवं वितरण और उन पर डीजल ट्रैक्टर की भांति अनुदान की व्यवस्था।

### वन मंत्रालय

1. अवनत वन भूमियों पर चारा विकास।
2. अवनत भूमियों पर गोवंश के अस्थाई आश्रय स्थल बनाना ताकि उनके गोबर व गोमूत्र से उस भूमि का रिक्लेमेशन हो सके।
3. सामाजिक वानिकी कार्यक्रम में अधिकाधिक चारा प्रजातियों का वृक्षारोपण।
4. अवनत वन भूमि पर गो अभयारण्यों की स्थापना।
5. संयुक्त वन प्रबंधन के अंतर्गत निकटवर्ती क्षेत्रों में वन पंचायतों का गठन व उनके गोवंश हेतु अवनत वन क्षेत्र का उपयोग।
6. नर्सरी में गोबर–गोमूत्र के खाद/कीटनाशक व गोबर से बने गमलों का उपयोग।

### नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय

1. व्यापक स्तर पर गोबर आधारित बायोगैस /सीएनजी संयंत्रों की स्थापना।
2. बैलों की कर्षण (खींचने की) शक्ति के समुचित उपयोग हेतु उन्नत बैल चालित विद्युत जनरेटर, सिंचाई पंप, कोल्हू, आटा चक्की, बैलगाड़ी, ट्रैक्टर व अन्य यंत्रों का विकास व व्यापक उपयोग।
3. राजकीय क्षेत्र के छोटी दूरी के माल ढुलान को बैलगाड़ियों हेतु यथासंभव आरक्षित किया जाना – जैसे एफसीआई गोदाम से सस्ते गल्ले की दुकान तक का माल ढुलान आदि।

### उद्योग मंत्रालय

1. पंचगव्य (गोबर, गोमूत्र, दूध, दही व घी) से विभिन्न उत्पाद यथा साबुन, अंगराग, शैम्पू, धूप, अगरबत्ती, मच्छर भगाने की क्वायल, फिनाइल, पैंट, पेपर, गत्ता, डायरी, गमले, टाइल, मूर्तियों आदि के व्यापक स्तर पर निर्माण व विपणन हेतु सहायता/प्रोत्साहन एवं सरकारी कार्य में उपयोग।
2. भूसे की कमी के समय उसके औद्योगिक उपयोग पर प्रतिबंध।

### आयुष मंत्रालय

1. आयुर्वेदिक चिकित्सकों द्वारा पंचगव्य की औषधियाँ भी अन्य औषधियों के साथ प्रैस्क्राइब किया जाना।
2. उपरोक्त हेतु राजकीय आयुर्वेदिक चिकित्सकों का प्रशिक्षण एवं व्यापक स्तर पर पंचगव्य की औषधियों का निर्माण।

### नगर विकास मंत्रालय

1. नगर निकायों द्वारा गोवंश आश्रय स्थलों की व्यवस्था तथा उनका स्वयं अथवा संस्थाओं के माध्यम से संचालन।
2. गोबर्धन योजना व स्थानीय योजनाओं के माध्यम से गोबर का समुचित उपयोग।
3. गोबर से बने लट्ठों का शमशान घाट में तथा जाड़े में अलाव जलाने के लिए उपयोग।

### ग्राम्य विकास/पंचायती राज मंत्रालय

1. गोवंश आश्रय गृहों की स्थापना एवं संचालन।
2. गोचर भूमियों को कब्जा मुक्त कराना, उन पर व अन्य अवनत भूमियों पर चारागाह विकास – मनरेगा व अन्य योजनाओं के माध्यम से।

3. स्वयं सहायता समूहों द्वारा पंचगव्य से विभिन्न वस्तुओं के निर्माण एवं विपणन में विभिन्न योजनाओं के अंतर्गत सहायता प्रदान करना।
4. गोबर के उपलों/लट्ठों का शमशान घाट में तथा जाड़े में अलाव जलाने के लिए उपयोग।

**खाद्य मंत्रालय**

1. भूसे की कमी के समय गोवंश आश्रय स्थलों को कैटल फीड ग्रेड का खाद्यान्न एफसीआई गोदामों से प्रचुर मात्रा में उपलब्ध कराना।
2. जब खाद्यान्न का बंपर उत्पादन हो तो उसके एक भाग को पूर्व से ही गोवंश के आहार हेतु उपलब्ध कराया जाना ताकि उसके भंडारण पर अनावश्यक व्यय न हो तथा वह खराब होकर कैटल फीड की श्रेणी में न पहुंचे।
3. मनुष्य के खाद्यान्न व पशुओं के भूसे/चारे की आवश्यकता का समेकित नियोजन।

**राज्य सरकारों से समन्वय**

1. देसी नस्लों के उन्नत सांड़ों व उनके सीमन की अधिकाधिक मात्रा में उपलब्धता।
2. राज्यों की बैस्ट प्रैक्टिसेज को आपस में शेयर कराना।
3. राज्यों को विभिन्न राजमार्गों व रेलमार्गों के किनारे खाली भूमियों, नहरों की पटरियों, नदियों के सीमावर्ती इलाकों, अवनत भूमियों व अन्य खाली भूमियों पर चारा विकास हेतु प्रेरित करना।
4. जैविक कृषि का प्रसार बढ़ने से रासायनिक उर्वरकों पर दी जाने वाली सब्सिडी की बचत के आधे भाग को राज्य सरकारों को उपलब्ध करवाना, जैसा कि केंद्र सरकार द्वारा घोषणा की गई है।
5. विभिन्न मंत्रालयों से समन्वय के आधार पर राज्य सरकारों को नीति निर्देश, एडवाइजरी आदि जारी कराना।

उपरोक्त विषय के अतिरिक्त अन्य मंत्रालयों से भी आवश्यकतानुसार समन्वय किया जा सकता है, जैसे सूखे के समय एक राज्य से दूसरे राज्य को भूसा रेलवे द्वारा निःशुल्क भिजवाया जाना। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय से समन्वय कर गोबर के विकिरण विरोधी गुण पर अनुसंधान व तत्संबंधी उपयोग विकसित कराये जा सकते हैं।

गोवंश–संरक्षण एवं संवर्धन की महत्ता को देखते हुए उपरोक्तानुसार विभिन्न मंत्रालयों एवं राज्य सरकारों से बैठकों एवं पत्राचार आदि के माध्यम से समन्वय किया जाना नितांत आवश्यक है।

यह भी उल्लेखनीय है कि मात्र जैविक कृषि के व्यापक प्रचार–प्रसार से सरकार को रासायनिक खाद/कीटनाशक पर प्रतिवर्ष दी जाने वाली कई लाख करोड़ रुपए की सब्सिडी में काफी बचत हो सकती है। उस बचत की धनराशि को गोवंश के रखरखाव व उपयोग में समुचित रूप से व्यय किया जा सकता है। गोवंश आधारित कृषि व उद्यमिता के विकास से किसानों की समृद्धि तो बढ़ेगी ही, ग्रामों से पलायन भी रुकेगा व जन स्वास्थ्य एवं पर्यावरण में सुधार होगा।

***(लेखक – भारतीय जीव–जन्तु कल्याण बोर्ड के सदस्य हैं)***

धर्मनारायण शर्मा (वरिष्ठ प्रचारक, विहिप)

# श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर विशेष
# गोमाता-गोवंश का संरक्षण-संवर्द्धन अनिवार्य

श्री मद्भगवत गीता के अनुसार भगवान श्रीकृष्ण का अवतार उस कालखंड में होता है जब धर्म का ह्रास एवं अधर्म की संवृद्धि होती है। भगवान कृष्ण का अवतार भी इस सूत्र के अनुसार हुआ। भगवान श्रीकृष्ण का जन्म यादव कुल में हुआ एवं जन्म के प्रारम्भ से ही उन्हें गोमाताओं का सहभाग मिला। अर्थात यह कहा जाय कि गोमाता–गोवंश के संरक्षण, संवर्द्धन और सेवा के निमित्त ही उनका जन्म हुआ। यह कहना अनुचित नहीं होगा कि उन्होंने गोमाता के दूध सेवन की शक्ति से ही पुरुषार्थ किये।

श्रीकृष्ण की अवतार महिमा तथा उनके जन्म का हेतु, यह सब भारत के विभिन्न विद्वानों ने बहुत अच्छी प्रकार समझा है। ऐसे अवतारी ने अधर्म का उच्चाटन करके धर्म स्थापना का श्रेष्ठ कार्य किया है। अनेक आयामों में धारण करने वाले वे एक रूप में योद्धा तो दूसरे रूप में लीला बिहारी लगते हैं। अपने बाल रूप में उनका व्यक्तित्व लीलापुरुषोत्तम का, रासलीला का तथा ग्वालवालों के साथ गोवंश चारण, माखन चोरी करते रहने का है। बहुआयामी व्यक्तित्व को किसी एक क्रिया पर समझना भूल का कारण होता है। बालपन से जो वृजगोपियों की मटकियां फोड़ रहे हैं, वही कृष्ण किशोर अवस्था को पार करते हुये कंस का संहार कर रहे हैं। ऐसे बहुरूपा श्रीकृष्ण को माखनचोर तथा गोपाल रूप में उनको जानने का प्रयत्न करते हैं। जिन्होंने उस काल के सभी दुष्ट शासको को छखाया तथा उनका संहार किया है। वाणासुर जैसा योद्वा भगवान् सदाशिव का भक्त जिसके बढ़े हुए हाथों का शमन करके दो हाथों वाला मानव बनाने वाले श्रीकृष्ण को कैसे पहचानेंगे?

युद्ध विशारथ श्रीकृष्ण ही गीता तत्व के उद्गाता हैं। यह तत्व आज भी मनुष्य मात्र में कर्मण्यता, समता–समरसता तथा एकात्मभाव का बोध करा रहा है। निराशा नहीं

आशा का महासागर पैदा हुआ है गीता के तत्वज्ञान से। मानव हड्डी–पसली का मात्र स्वरूप नहीं, वह आत्मभाव के कारण ईश्वरीय विभूति दिव्य स्वरूप है। मरण नहीं, कर्म की पूर्णता हेतु पुनर्जन्म व्यवहार है। गीता पलायन का नहीं पालन का उपदेश करती है। गीता मानव को जीवन यज्ञ मानती है। मनुष्य सदगुणी बने तथा निष्कामता को धारण कर अपनी जीवन नैया को सतत प्रवाहित रखे, ऐसा गरिमामय उपदेश करती है गीता। भगवद् सत्ता अनन्त तथा विराट है, यह ज्ञान प्रदान करने का हेतु है। गीता में इसलिये भगवान का विराटरूप प्रकट हुआ है गीता के ग्यारहवें अध्याय में। भगवान श्रीकृष्ण के विराट रूप को देखकर महाबली अर्जुन कम्पायमान हो गया तथा अपनी सारी ऊर्जा को समेटकर वह भगवान से प्रार्थना करते हुये कहता है–

*त्वमादिदेवः पुरुष पुराण,*
*स्त्वमस्य विश्वस्य परं विधानम्*
*वेत्तासि वैद्यं च परं च धाम,*
*त्वया ततं विश्वमनन्तरूप।। 38।।*

आप ही आदिदेव और पुराण पुरुष हैं तथा आप ही इस संसार के परम आश्रय हैं। आप ही सबको जानने वाले, जानने योग्य और परम धाम हैं। हे अनन्तरुप! आपसे ही सम्पूर्ण संसार व्याप्त है। ऐसे अनन्त रूपों को धारण करने वाले, सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को परिव्याप्त करने वाले, चिन्मय–चिदानन्द ब्रह्म के स्वरूप का भक्तों ने विभिन्न प्रकार से वर्णन किया है। जब भक्त अपने इष्ट के स्वरूप का दर्शन करता है तो उसकी वाणी प्रस्फुटित होकर एक श्रेष्ठ प्रार्थना बन जाती है। ऐसे ही कुछ श्रेष्ठ श्रद्धालु भक्तों ने भगवान के स्वरूप को उकेरा तथा जाना है। कैसे–कैसे प्रभु का वर्णन उन्होंने किया है, जिसे यहाँ प्रस्तुत करना समीचीन होगा। यह मानकर श्रीकृष्ण भक्तों की मंगल भावनाओं को प्रस्तुत किया जा रहा है। श्री मद्भागवत में श्री शुकदेवजी कहते हैं–

*कृष्ण में नमे वेहित्वमात्मानाम*
*खिलात्मनाम्।*
*जगद्वित्ताय सोऽप्यत्र देही वा*
*भाति मायया।।*

आप इन श्रीकृष्ण को सम्पूर्ण भूतप्राणियों की आत्मा जानें। इस लोक में भक्तजनों के उद्धार के लिये ये भगवान् अपनी माया से देहधारी से प्रतीत होते हैं। श्री मद्भागवत में ब्रह्मदेव कहते हैं–

*अस्यापि देव वपुषो मदनुग्रहस्य*
*स्वेच्छा मयस्य न तु भूतमयस्य*
*कोऽपि नेरो महि त्ववसितं मनसा*
*ऽन्तरेण साक्षातवैव*
*किमितात्मसुखानुभूते।।*

हे देवा! अपकी दिव्य प्रकट देह की महिमा को भी कोई नहीं जान सकता, जिसकी रचना पंचभूतों से न होकर मुझ पर अनुग्रह करने के लिये अपने भक्तों की इच्छा के अनुसार ही हुई है, फिर आपके इस साक्षात् आत्मसुखानुभव अर्थात् विज्ञानानन्दधन स्वरूप को तो हम लोग समाधि के द्वारा भी नहीं जान सकते। भगवान् श्रीकृष्ण ने मनुष्य मात्र का उद्धार करने हेतु गीता का अद्भुत ज्ञान दिया है। श्रीकृष्ण ने अर्जुन के बहाने यह उपदेश दिया है कि तुम अपने को परमात्मा के हाथ की कठपुतली बनालो, उसे अपना सेनानायक समझो और अपने को साधारण सिपाही समझो एवं संसार में जो कुछ भी कर्म करो उसे उसकी आज्ञा का पालन समझो; यह दृढ़ विश्वास रखो कि तुम जो कुछ भी कर्म करते हो वह परमात्मा का ही है।

भगवान की इस प्रकार की वाणी को धारण कर मनुष्य जब अपनी जीवन रचना करता है तो उसके मन में यह दृढ़ धारणा स्थापित हो जाती है कि भगवत् शरण ही सर्वश्रेष्ठ है। भगवान् ने कहा भी है मेरी शरण हो जाओ और सबका आश्रय छोड़ दो। मेरी (परमेश्वर) कृपा से तुम्हें परम शान्ति और शाश्वत सुख प्राप्त होगा। ऐसे शरणागत वत्सल भगवान श्रीकृष्ण को सर्वश्रेष्ठ गोपालक–गोसंरक्षक होने के कारण ही गोपाल–गोविन्द के नाम से भी पुकारा जाता है।

स्मरण रहे भारत में प्राचीन समय से गोपूजा, गोपालन, गोरक्षा का कार्य तत्परता व भक्तिपूर्वक चलता रहा है। वर्तमान में भी आम हिन्दू में गोमाता का भाव विद्यमान है। हां, कुछ तथाकथित प्रगतिशील व्यक्तियों का व्यवहार अजीव प्रकार का है। ये प्रगतिशील पुरुष उस गोमाता के बारे में अश्रद्धापूर्वक ऊटपटांग बोलते रहते हैं, जो गोमाता घास खाकर अमृततुल्य दूध प्रदान करती है, उसे अपशब्दों से सम्बोधित करने वाले संभवतः यथार्थ में घास खाते होंगे। ऐसे घास खाने वाले ही अधिकतर गोमांस (बीफ) खाने वाले भक्षाभक्षी हैं। भक्षाभक्षी मानव तमोगुणी होता है, ऐसा तमोगुणी हिंसक व पापकर्मी बना जीवहिंसा और नीचकर्म को धारणकर पशु से भी गया बीता मानव बन जाता है। दया, उदारता उसे छूती नहीं। ऐसे मानव ही गोहत्या का समर्थन और गोहत्या में प्रवृत्त रहते हैं। अतः भगवान श्रीकृष्ण द्वारा बताये गये मार्ग पर चलकर हमें सर्वदेवमयी गोमाता –गोवंश के सरक्षण–संवर्द्धन के लिए प्राणपन से संलग्न होना अनिवार्य है।

पूजा पाराशर (स्वतंत्र लेखिका)

# गोमाता की पीड़ा हरने वाले सिद्धपुरुष 'तिरुमूलर'

*"स्पृष्टाश्च गावः शमयन्ति पापं,*
*संसेविताश्चोपनयन्ति वित्तम्।*
*ता एव दत्तास्त्रिदिवं नयन्ति,*
*गोभिर्न तुल्यं धनमस्ति किंचित्।"*

(बृहत्पराशरस्मृति ५/१०)

अर्थात्, "स्पर्श कर लेने मात्र से ही गौएँ मनुष्य के समस्त पापों को नष्ट कर देती हैं और आदरपूर्वक सेवा किए जाने पर अपार संपत्ति प्रदान करती हैं। वे ही गौएँ दान दिए जाने पर सीधे स्वर्ग ले जाती हैं। ऐसी गौओं के समान और कोई भी धन नहीं है।"

"कठोर वचन कच्चे फल की भाँति हैं परंतु प्रेम भरे शब्द एक स्वादिष्ट मीठे पके फल की तरह होते हैं। क्या कोई पके फल मिलने पर किसी कच्चे फल को खाना चाहेगा? फिर किसी को कठोर शब्दों का प्रयोग क्यों करने की आवश्यकता है, जबकि सभी के लिए प्रेम भरे शब्दों का प्रयोग करना संभव है! सदैव मुस्कुराते रहना, हृदय में प्रेम रख सुख देने वाली वाणी बोलना ही परमेश्वर को प्रसन्न करने का सरल और सहज उपाय है (अनूदित)।"

ऐसे प्रेरणादाई शब्द व जीवन का मार्गदर्शन करने वाले दक्षिण के 63 नायनमारों (शिवभक्त) और 18 सिद्धों में एक महान संत 'तिरुमूलर' के हैं, जो 3000 वर्ष तक अपनी कृपा से समाज को अनुगृहीत करते रहे। प्रति एक वर्ष बाद अपनी साधना से जाग एक पद्य लिखते एवं पुनः तप में विलीन हो जाते। इस प्रकार श्रेष्ठ तपस्वी ने 3000 पद्य लिख मानव जाति को उसके कल्याण हेतु **'तिरुमंदिरम'** उपहारस्वरूप दिया,

जो आज भी तमिल भाषा में पूजनीय है एवं मार्गदर्शक बन मानवजाति का कल्याण कर रहा है।

विभिन्न स्रोतों के अनुसार तिरुमूलर के होने का समय भिन्न – भिन्न है, परंतु 'तिरुमंदिरम' के पद संख्या 704 के अनुसार उन्हें 7000 वर्ष पूर्व माना जाता है। उनका वास्तविक नाम सुंदरनादर था। वे श्रीनंदीदेव के शिष्य माने जाते हैं। उत्तर से यात्रा करते हुए केदारनाथ, पशुपतिनाथ, काशी, विंध्य पर्वत आदि स्थानों से होते हुए, दक्षिण की ओर कालाहस्ती, तिरुवालंगाड़, कांचीपुरम, तिरुवदिगई आदि की यात्रा प्रारंभ कर दी। वे अपने मित्र **'ऋषि अगस्त्य'** से मिलने की इच्छा से **'पोधिगई मलई'** पहुँचे, जहाँ 'ऋषि अगस्त्य

पूर्व में ही दक्षिण में आकर बस गए थे। सुंदरनादर यात्रा करते हुए कावेरी नदी के तट पर पहुँचे। वहाँ स्थित **'तिरुवावड़तुरई शिव मंदिर'** में प्रार्थना कर चोलनाडु के सात्तनूर गाँव में विश्राम हेतु ठहरे। वहाँ कुछ ऐसा घटा जो अद्‌भुत ही नहीं, एक महान संत–सिद्ध की श्रेष्ठता को सिद्ध करता है; समाज को संदेश देता है कि जीवन क्या है; मनुष्यता क्या है; एवं गोमाता का स्थान कहाँ है?

योगी सुंदरनादर ने देखा कि सामूहिक रूप में बैठी गौएँ विलाप कर रही हैं। वे किसी संकट में हैं, कोई व्यक्ति उन गायों के बीच में लेटा हुआ है। पास जाकर देखा तो गायों का पालक मृत अवस्था में पड़ा था, जिसका नाम मूलन था। उसे किसी सर्प ने डँस लिया था। गाय अपने मालिक के जागने और घर जाने के लिए व्याकुल एवं दुःखी थीं। गायों को इतना दुःखी और कष्ट में देख सुंदरनादर ने विचार किया कि इनको इस कष्ट से उबारने का एक ही उपाय है कि उनके मालिक को जीवित किया जाए, परंतु यह कैसे हो सकता है! और यदि ऐसा न हुआ तो गोमाता की इस पीड़ा को कैसे दूर किया जा सकता है? अतः, योगी सुंदरनादर ने अपनी सिद्धि **'परकाया प्रवेश'** द्वारा मूलन के शरीर में प्रवेश कर इस समस्या का समाधान निकालने का विचार किया। अपने शरीर को सुरक्षित स्थान पर छिपाकर, वे 'परकाया प्रवेश' द्वारा मूलन के शरीर में प्रवेश कर जीवित हो गए। मूलन को जीवित देख गौएँ अत्यंत खुश हो गईं और मूलन को चारों ओर से घेर उसे चाटने लगीं; उससे लिपटने लगीं; उसे प्यार करने लगीं। सुंदरनादर ने सोचा कि इन्हें

उनके घर तक पहुँचाना भी मेरा कर्तव्य है, अतः अपने स्वभावानुसार सभी गौएँ अपने मालिक के साथ आगे–आगे मूल स्थान की ओर प्रस्थान करने लगीं। जब सभी गौएँ घरों पर आ गईं तब सुंदरनादर ने सोचा कि मूलन विवाहित है, उसकी पत्नी अवश्य उसकी प्रतीक्षा कर रही होगी।

इधर मूलन की पत्नी, बहुत देर होने के कारण, उसे ढूँढ़ने के लिए गाँव में निकली। यह देखकर वह आश्चर्य में पड़ गई कि मूलन गाँव के एकांत स्थान पर आँख बंद कर किसी गहरे चिंतन में डूबा है। उसने पूछा कि अभी तक घर क्यों नहीं वापस आए, क्या आपको अपनी स्त्री पर दया नहीं आती? सुंदरनादर शांत हो यह सोच में थे कि यदि मूलन की मृत्यु का समाचार सुनाया तो इसकी क्या दशा होगी! अतः, वे शांत रहे। जैसे ही स्त्री ने घर चलने के लिए मूलन का हाथ पकड़ा, उन्होंने तुरंत ही झटक दिया। क्योंकि यह मूलन नहीं योगी–सिद्ध सुंदरनादर थे। इस प्रकार का व्यवहार देख वह आश्चर्यचकित हो गई और विलाप करने लगी। सुंदरनादर ने स्त्री को इस स्थिति में देख करुणा भरे शब्दों में कहा कि अब हमारे बीच कोई संबंध नहीं है। मैंने अपना जीवन शिव के चरणों में अर्पित कर दिया है। ऐसा कहकर वे, वहाँ से चल दिए और गाँव के पास के मंदिर में पहुँचे।

मूलन की पत्नी के लिए ये सब असहनीय था, अतः वह अगली सुबह गाँव के मुखिया और बड़े लोगों के साथ मंदिर पहुँची, जहाँ मूलन रुके थे। मूलन को देख सभी आश्चर्य में थे क्योंकि अब यह वह मूलन नहीं था। फिर भी उन्होंने मूलन से उसकी पत्नी को अपनाने के लिए आग्रह किया परंतु मूलन शांत थे। उनका तेज, दिव्यता चारों ओर फैल रही थी; उनके शरीर के चारों ओर फैली दिव्य–आभा ने सभी को अनुभव करा दिया कि वह मूलन नहीं है; मूलन रूप में कोई दिव्य–योगी पुरुष है, परंतु उसकी पत्नी नहीं समझी। अतः उसने पैर छुए और यह सोचकर वापस हो गई कि उसका पति पागल हो गया है।

अंततः सुंदरनादर, 'तिरुमूलर' के रूप में जाने जाने लगे।

तिरुमूलर ने अपने ध्यान–शक्ति से अपने शरीर को खोजने का प्रयास किया, परंतु वह वहाँ नहीं मिला जहाँ उन्होंने रखा था। उन्होंने अपनी योगिक शक्ति से पता कर लिया कि यह सब भगवान शिव का खेल है, जहाँ महादेवी गोमाता के रूप में आईं और यह लीला की। उनका शरीर, शिव से एक होना, यह सब उनकी ही इच्छा थी। वे समझ गए कि इसी शरीर में रहकर उन्हें दक्षिण में तमिल भाषा द्वारा मानव जाति का कल्याण करना है। अतः तिरुमूलर तमिलनाडु के चिदंबरम के पास 'तिरुवावड़तुरई मंदिर' पहुँचे। वहाँ अरसमरम (पीपल) के पेड़ के नीचे 'जीव समाधि' धारण की।

**'तिरुवावड़तुरई मंदिर' का वास्तविक नाम 'गोमुक्तेश्वर' है।** इसके पीछे एक कथा है, जिसका विवरण मंदिर के 'स्थल पुराण' (तमिल) में मिलता है। एक बार भगवान विष्णु और शिव पासा खेल रहे थे, जिसकी निर्णायिक स्वयं पार्वती माँ थीं। माँ पार्वती अपने भाई विष्णु का पक्ष लेने लगीं, तब भगवान शिव ने उन्हें श्राप दिया कि भूलोक में जाकर तुम गोमाता का रूप धारण करो, तिरुवावड़तुरई में जाकर तुम्हें मोक्ष प्राप्त होगा। गोमाता के रूप में माता पार्वती ने पृथ्वी लोक पर भिन्न–भिन्न क्षेत्रों में जाकर शिव की आराधना की। अंत में इस क्षेत्र में आकर शिव आराधना में लीन हो गईं, जहाँ स्वयं शिव ने आकर उन्हें दर्शन दिए और श्राप से विमोचन कर, पुनः देवी पार्वती के रूप में स्वीकार किया। अतः इस मंदिर का प्राचीन नाम 'गोमुक्तेश्वर' है, जो स्थल पुराण में वर्णित है।

यह ईश्वर की लीला है, जिसका कोई सार नहीं! गोमाता की मुक्ति के लिए तिरुमूलर को यह रूप धारण करना पड़ा या तिरुमूलर को यह रूप धारण करने के लिए माता पार्वती को गोमाता का रूप धारण करना पड़ा!

तिरुमूलर ने चार भिन्न वेदों

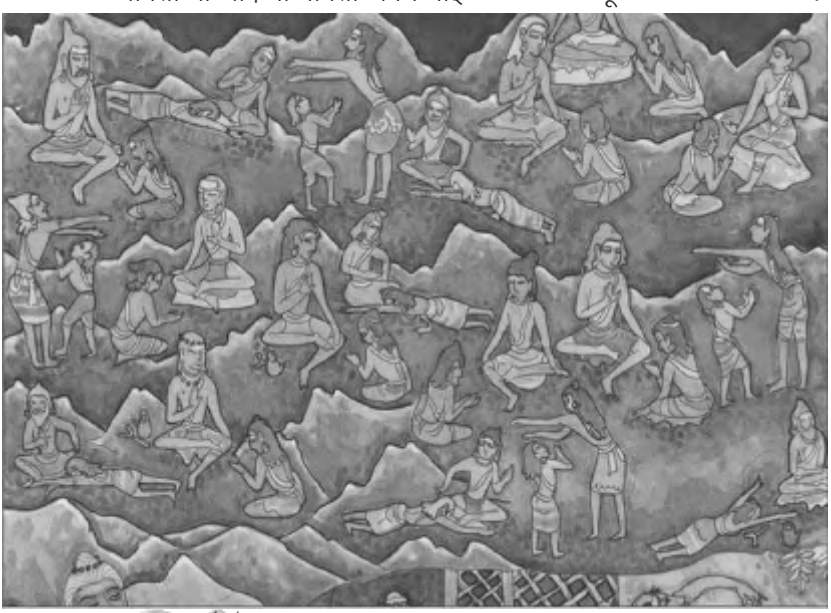

*'सरियई' (सत्कर्म), 'किरियई' (विधि – विधान), 'योगम्', एवं 'ज्ञानम्'* की रचना की एवं ईश्वर प्राप्ति व मोक्ष प्राप्ति के मार्ग दिखाए। 'तिरुमंदिरम' उनका सबसे बड़ा ग्रंथ है, जो तिरुमुरै (शिव की स्तुति हेतु रचित तमिल स्तोत्रों का संग्रह, जो शैव सिद्धांत दर्शन का आधार है) का १२वाँ भाग है। तिरुमूलर कहते हैं, "जो ईश्वर को मानता है वह प्रत्येक प्राणी से प्रेम और करुणा का भाव रखता है। वे कहते हैं, गायों को घास अर्पित करनी चाहिए व अन्य जीव–जंतुओं के लिए भी हमें वह सब करना चाहिए जो हम कर सकते हैं (अनूदित)।"

माता हो या गोमाता, उसकी पीड़ा को महसूस करने वाला एवं उसे हरने वाला सदैव ईश्वर को प्रिय होता है। उसका जीवन आनंद से भर जाता है। गोमाता की कृपा से ही सुंदरनादर ने तिरुमूलर के रूप में शिवत्व को प्राप्त कर, मानव समाज का कल्याण किया। वे कहते हैं –

*पारपान् अगतिले, पारपसु अइंदुंडु*
*मेइपारुम् इंद्री वेरित्तु तिरिवनऽ*
*मेइपारुम् उंडाय वेरियुम् अड़ंगिनाल्*
*पारपान् पसुअइंदुम् पालाय सोरियुमे।।*

ब्राह्मण के घर में दूध देने वाली पाँच गायें हैं, वे अपने पालक के बिना इधर–उधर भटक रही हैं। गोपालक भी होगा और भटकना भी बंद होगा और पाँचों गायें मात्र दूध ही देंगीं। अर्थात् मानव शरीर की पाँचों इंद्रियाँ बिना नियंत्रण के भटकती रहती हैं। जो आत्म–स्वरूप 'सत्य' को जान लेता है, वह अपनी पाँचों इंद्रियों को वश में कर लेता है और वही पाँचों इंद्रियाँ सदैव अमृत प्रदान करने वाली बन जाती हैं।

वैद्य नंदिनी भोजराज (एम.डी., आयुर्वेद)

# वर्षाऋतु और पंचगव्य

भारत में लगभग सभी प्रांतों में वर्षा का प्रारंभ हो चुका है। आकाश में बादलों का जमा होना, अब जोरों से बारिश होगी ऐसा प्रतीत होता है और कुछ समय बाद बिना बारिश के ही आकाश का खुलना, यह हम सब अनुभव करते है। इतने बड़े–बड़े पानी से भरे बादल कौन लेकर जाता है? हम पंचमहाभूत जानते हैं– पृथ्वी, जल, वायू, अग्नी और आकाश। आकाश में जमें यह जल महाभूत से भरे बादल ''वायु'' महाभूत एक जगह से दूसरी जगह ले जाता है। यह प्रक्रिया वर्षा ऋतु में प्रायः अनेक बार अनुभव की जाती है। वातावरण की इस स्थिति को आयुर्वेद के अनुसार वायु का प्रकोप काल माना जाता है। जो यह असर हम पर्यावरण में देखते है, वहीं उसका असर हमारे शरीर पर भी होता अनुभव करते हैं, लेकिन यह बदलाव अलग–अलग रूप में होता है। अतः कभी हम समझ सकते हैं तो कभी हमें यह वायु प्रकोप की अवस्था ध्यान में नहीं आती, लेकिन उसका परिणाम तो शरीर पर होता ही है।

सावन ऋतु में आने वाली पूर्णिमा को भारत के अधिकांश स्थानों पर विशेष महत्व दिया गया है। अनेक राज्यों में **''माताजी''** की पूजा–आराधना की जाती है। इस दिन विधिवत् रूप से बनाये गए **''पंचगव्य''** का प्राशन पुरोहितों द्वारा कराया जाता है। यह ताजे पंचगव्य बनाने की विधि विशेष है, लेकिन वर्तमान स्थिति में हमारे पास उपलब्ध गोवंश संपूर्ण रूप से स्वस्थ है या नहीं? सबको इसकी जानकारी नहीं रहती।

पंचगव्य (गाय का दूध, दही, घी, गोबर एवम् गोमूत्र) हमें जब स्वास्थ रक्षा हेतु प्राशन करना है तब उसकी गुणवत्ता का विधिवत् परीक्षण होना, साथ ही विशेष निरीक्षण के माध्यम से ही उसका निर्माण करने की आवश्यकता है। साथ ही निर्मित पंचगव्य की क्या कुछ परीक्षण (जो तुरन्त हमें गुणवत्ता की जानकारी दे सके।) करना भी समय की मांग या आवश्यकता भी है। वर्तमान में वैज्ञानिक उसके लिए कार्यरत हैं। पंचगव्य इकठ्ठा करते समय हमारा गोवंश भारतीय वंश का ही हो एवम् स्वस्थ हो, यह अत्यावश्यक है।

दूध ताजा एवम् एक बार गरम करके ठंडा किया गया हो। दही ताजा हो, मीठा हो, अच्छे से तैयार किया गया हो, चीनी मिट्टी के बर्तन में तैयार किया गया हो।

उपरोक्त दूध से दही जमाकर मक्खन निकाल कर अग्निकर्म द्वारा बनाया गया घी ही आवश्यक, अपेक्षित गोघृत गाय का घी है। ताजा गोमूत्र सीधा लिया गया हो। गोमूत्र धातु के बर्तन में न रखा गया हो। गोबर भी ताजा एवम् गाय के गोबर देने के तुरन्त बाद ही लिया गया हो। इस प्रकार तैयार पंचगव्य पंडितजी मंत्र के उच्चारण के साथ तैयार करते हैं। इसका सेवन भी बनाने के दो–से तीन घंटों में प्राशन हो जाना अतिआवश्यक है। यह सब नियमों का पूर्ण रूप से पालन होना उसकी गुणवत्ता के लिए नितांत जरूरी है। लेकिन यह सब जगह संभव होना कठिन होता है। अतः गोविज्ञान अनुसंधान केन्द्र देवलापार में बनाया गया ''पंचगव्य घृत'' भी चिकित्सक के मार्गदर्शन में सेवन कर सकते हैं।

वर्षा ऋतु में वातावरण में आद्रता अधिक होती है। इन दिनों हमें प्यास कम लगती है, लेकिन पेशाब आती रहती है। वातावरण में नमी होने के कारण त्वचा द्वारा होने वाला पानी का शोषण अत्यंत कम मात्रा में होता है। जिस तरह से वर्षा काल में गीले कपडे जल्दी नहीं सूखते, ठीक उसी तरह वातावरण में आग्नेय गुण की कमी होती है।

जलते हुए अंगारे पर पानी डालने से अग्नि कम होती है। जल महाभूत के आधिक्य से अग्नि की शक्ति कम होती है। अतः पचने में भारी, अतिमात्रा में एक समय आहार सेवन करना, भोजन के तुरंत बाद सोना, भोजन गुण से ठंडे होने वाले पदार्थों का सेवन करना (उदाहरण – प्याज, चंदन, ककडी आदि) इनके प्रभाव से हमारी पचनशक्ति अधिक कमजोर होकर, अन्न अधिक समय पाचन पूर्ण करने में लेता है। ऐसे समय अन्न में किण्वीकरण की प्रक्रिया होने लगे तो शरीर में अपान वायु की विकृति उत्पन्न हो सकती है। परिणामस्वरूप शरीर में किसी स्थान में वेदना या कमर घुटनों में दर्द आदि भी हो सकता है। इस अवस्था में देवलापार में तैयार किया **कामधेनु हरडे चूर्ण** भोजन के एक–डेढ़ घंटा पूर्व आधा से एक चम्मच गरम पानी के साथ लेने से लाभ मिल सकता है। लेकिन चिकित्सक की निगरानी में ही औषधि सेवन करें। वर्षा ऋतु वात प्रकोप का काल होता है। अतः इन दिनों में शरीर की गरम तैल से मालिश करना लाभदायक होता है। गोविज्ञान अनुसंधान केन्द्र देवलापार में गाय के दूध का उपयोग करते हुए आयुर्वेदिक पद्धति से, शास्त्र शुद्ध पद्धति से नारायण तैल, बलादि तैल भी बनाए जाते हैं। गरम पानी में इनकी बोतल को रखकर तैल को गरम करें। ऐसा करने से औषधीय गुण–धर्म कम नहीं होते। यह तैल सुबह खाली पेट लगाना अधिक लाभदायक है। अगर हम दोपहर–शाम को लगाते हैं तब तैल लगाने के तीन से चार घंटा पहले हमारा भोजन खत्म होना जरूरी है। सेवन किये गए अन्न का पचन पूर्ण हो जाने पर पेट हल्का होता है। साथ ही उस समय तैल अच्छे से शरीर के अंदर प्रवेश करता है। आवश्यकता होने पर दर्द वाले स्थान पर सिकाई की जा सकती है। थोडे समय तैल लगा कर रहने देवें, तदुपरान्त गरम पानी से नहाया जा सकता है।

कामधेनु मालिश तैल गोबर के रस एवम् गोमूत्र से बनाया जाता है। गोबर एवम् गोमूत्र को दर्द रहने वाले स्थान पर लगाने से वेदना कम होती है। यह सिद्ध तैल होने से जहां तैल लगाया गया है उस स्थान पर वेदना उत्पन्न करने वाले कारणों को गोबर, गोमूत्र के कारण कमी आने से दर्द भी कम होता जाता है। अतः यह तैल घर– घर की दवा है। अधिक जानकारी प्राप्त करने हेतु गोविज्ञान अनुसंधान केंद्र, देवलापार, नागपुर द्वारा संचालित महल एवम् 146 शिवाजीनगर, नागपुर स्थित पंचकर्म केन्द्र से मार्गदर्शन प्राप्त कर सकते हैं।

***सम्पर्क : 9422808175***

गोपाल कृष्ण सोलंकी (वैद्य)

# गाय को माता मानने का वैज्ञानिक आधार

आज के वर्तमान युग में हम देखते हैं कि लोगों (जनमानस) में गोमाता के प्रति श्रद्धा एवं विश्वास में कमी आती जा रही है। इसी कारण गोवंश की उपेक्षा तथा पालन–पोषण कम होता जा रहा है। खासतौर पर युवा पीढ़ी का तो गोमाता पर विश्वास लगभग खत्म–सा हो गया है। इसका कारण है कि युवा पीढ़ी में जागरूकता का अभाव है। उन्हें गोमाता के विषय में जानकारी ही नहीं है। वे सोचते हैं कि गोमाता को गो–ग्रास देना, उनकी पूजा–अर्चना करना, उनकी प्रदक्षिणा करना आदि व्यर्थ हैं। युवा पीढ़ी इन सब कार्यों को महज एक धार्मिक कर्मकाण्ड तथा ढकोसला समझती है। वे गोमाता को कूड़ा–करकट खाने वाली, सड़कों पर बेसहारा घूमने वाली तथा दान प्राप्त करने के लिए एक धार्मिक तथा कर्मकाण्ड वाली वस्तु समझते हैं। युवा पीढ़ी गोमाता की वैज्ञानिकता को नहीं समझती है, यही उनकी अरुचि का कारण है।

मेरा यह लेख युवा पीढी को गोमाता के वैज्ञानिक पहलुओं से अवगत कराने के लिए है। मैंने यथासम्भव कोशिश की है जिससे उन पहलुओं पर प्रकाश डाला जा सके। गोमाता के धार्मिक पक्षों पर धार्मिक ग्रंथों में काफी–कुछ बताया गया है। मेरा इस लेख के द्वारा युवा पीढ़ी को जाग्रत करने में यह लेख सहायक हो, ऐसी गोमाता से शुभकामना करता हूं। गो–विज्ञान के क्षेत्र में प्राप्त प्रमुख पेटेंट–आधुनिक युग की देन हैं। पेटेंट का अर्थ होता है – विशेष अनुसंधान जो

पूर्व में ज्ञात नहीं था तथा जिसे बड़े स्तर पर उपयोग किया जा सके। वास्तव में विश्व स्तर पर अनुसंधानकर्ताओं के द्वारा पेटेंट एकाधिकार रायल्टी (कट) कमाने के लिए ज्यादा प्राप्त किए जाते हैं। लेकिन गोविज्ञान के क्षेत्र में प्राप्त किए गए लगभग सभी पेटेंट लोकाधिकार एवं व्यापक जन–जागृति के लिए हैं।

**गोमूत्र अर्क पर प्राप्त पेटेंट** – पेट के रोगों से लेकर त्वचा रोग, कमजोरी, एलर्जी, कब्ज, मधुमेह, रक्तचाप, पीलिया, किडनी के रोग, कैंसर आदि में गोमूत्र अर्क को लाभदायक मानते हुए इस संदर्भ में सी.एस.आई.आर को पेटेंट प्राप्त हुआ है। यूएस पेटेंट न. 6410059 सन 2002 में लिया गया। इसमें गोमूत्र अर्क को एन्टीबायोटिक, एन्टी फंगस, औषधि की प्रभावकारिता को बढ़ाने वाला पाया गया। दूसरा पेटेंट (यूएस पेटेंट न. 6896907) मई 2005 में गोमूत्र अर्क के कैंसर विरोधी गुणों के शोध पर प्राप्त हुआ। इसी प्रकार गोमूत्र कीट नियंत्रक के रूप में भी एक पेटेंट कीटों के रोकथाम के लिए प्राप्त किया गया। अब तक गोमूत्र पर 3 यूएस पेटेंट तथा 2 चाइनीज पेटेंट प्राप्त किये जा चुके हैं।

गाय के दूध में वैज्ञानिकों के मतानुसार 8 प्रकार के प्रोटीन, 6 प्रकार के विटामिन, 21 प्रकार के अमीनो एसिड, 11 प्रकार के चर्बीयुक्त एसिड, 25 प्रकार के खनिज तत्व, 19 प्रकार के नाइट्रोजन, 4 प्रकार के फास्फोरस यौगिक एवं 2 प्रकार की शर्करा होती है। गाय की रीढ़ में 'सूर्यकेतु' नामक नाड़ी होती है जो सूर्य के प्रकाश में क्रियाशील होने पर वह पीले रंग का पदार्थ छोड़ती है। अतः गाय का दूध पीले रंग का होता है। गोदूग्ध एवं गोघृत से कोलेस्ट्राल नहीं बढ़ता। गाय के दूध पर किए गए एक ताजा शोध में वैज्ञानिकों ने दावा किया है कि गाय के दूध में एक ऐसा पेप्टाइड होता है जो मनुष्य के पेट के कैंसर सेल को मारने में सक्षम है। ताईवान में किए गए इस शोध में वैज्ञानिकों ने गाय के दूध में पेप्टाइड फैगमैंट ढूंढ़ निकाला है जिसका नाम लेक्टोफिरिसिन बी 25 (एलएफसिन बी 25) है। खोज में पता चला है कि इस पेप्टाइड में मानव शरीर में होने वाले पेट के कैंसर से लड़ने की क्षमता होती है।

न्यूजीलैंड के डेयरी वैज्ञानिक कीथ बुडफोर्ड के शोधग्रन्थ **'डेविल इन द मिल्क'** का सार है कि **यूरोप, न्यूजीलैंड व आस्ट्रेलिया की होस्ट्रीयन, जरसी, फ्रिजीयन प्रजाति की गायों के दूध में एक प्रोटीन ए1 बीटा कैसीन होती है जिसमें हृदय रोग, मधुमेय, ओटिज्म, स्रिजोफेनिया, एलर्जी आदि रोगों के रोगाणु मिलते हैं।** आस्ट्रेलिया के लिनेट हाफमैन ने जारी अपनी रिर्पोट दिनांक 17 मई 2008 में लिखा है कि आस्ट्रेलिया के विक्टोरियन डेरी फार्म वेने पीटर तथा डेविल मलकेही ने कीथ वुडफोर्ड के अनुसंधान की पुष्टि की है।

शिशुओं के लिए स्तनपान सर्वोत्तम है, इसके लिए किसी प्रमाण की आवश्यकता नहीं है। स्तनपान संभव नहीं होने पर हमें एक रचनात्मक आहार की आवश्यकता होगी जो मां के दूध के समान हो। **देशी गाय का दूध ही मां के दूध का सर्वोत्तम विकल्प है,** इसलिए गाय के दूध को आधार मानकर बनाये गए दूसरे खाद्य उत्पाद शिशुओं के लिए रचनात्मक आहार हैं। यह कार्य फूड कन्ट्रोल अन्तरराष्ट्रीय शोध पत्रिका में जो कि इंग्लैंड से प्रकाशित होता है के खण्ड 17 पेज न. 180–182 पर वर्ष 2006 में प्रकाशित हुआ है। पेटेंट प्रार्थना पत्र सं. 160/डी/2005 दिनांक 23 जनवरी, 2006 को फाइल कर दिया गया है। पांचवे विश्व आयुर्वेद सम्मेलन भोपाल की क्लीनिकल जोन में मरीजों का इलाज कर रहे आयुर्वेदाचार्यों ने गाय के दूध के सम्बन्ध में दावा किया है कि गाय के बछड़े के जन्म से छह घंटे बाद तक का दूध (चीका) पीने से लकवाग्रस्त व्यक्ति ठीक हो जाता है। इतना ही नहीं, गाय का घी सुबह–शाम खाने से व्यक्ति की याददाश्त बढ़ती है। अहमदनगर से आये डॉ. लक्ष्मीकान्त काटिकर ने बताया कि गाय के चीके से इम्युनिटी सिस्टम मजबूत होता है। इस समयावधि के दूध का सेवन करने से लकवा, हृदय रोग जैसी गंभीर बीमारी ठीक हो जाती हैं। डॉ. लक्ष्मीकान्त काटिकर ने बताया कि ब्राह्मी एवं घी खाने से याददाश्त बढ़ती है। इसके साथ अश्वगंधा का प्रयोग करने से मिर्गी और डिप्रेशन के मरीज को राहत मिलती है। उन्होंने बताया कि **मिर्गी के मरीज अगर पंचकर्म कराने के साथ अश्वगंधा खायें तो मिर्गी रोग ठीक हो सकता है।**

गाय के दूध में ही STRONTIAN तत्व है जो अणु विकिरण का प्रतिरोधक है। गाय के दूध में **'सेरीब्रोसाइड'** तत्व है जो दिमाग एवं बुद्धि के विकास में सहायक है। गाय का दूध शीतल होता है, अतः पित्त विकारों में बहुत लाभदायी है।

गोमूत्र से बैटरी वाली लालटेन जलेगी। इस बैटरी को बिजली से चार्ज नहीं करना पड़ेगा। ऐसिड की जगह गोमूत्र का इस्तेमाल होगा। बैटरी लो होने पर चार्ज करने की जगह गोमूत्र बदलने से लालटेन में लगी 12 वोल्ट की बैटरी पुनः चार्ज हो जायेगी तथा लाइट जलने लगेगी। यह अनोखा व बेहद उपयोगी प्रयोग किया है कामधेनू पंगचव्य एवं अनुसंधान संस्थान अंजोरा के डायरेक्टर डॉ. पी. एल. चौधरी ने। उन्होंने बताया कि यह कमाल केवल देशी नस्ल की गाय के गोमूत्र से ही सम्भव है।

हमारा भारतीय गोवंश हमारे लिए सात्विक ऊर्जा का स्रोत है। परमाणु वैज्ञानिक डॉ. मन्नम मूर्ति ने एक यंत्र बनाया जिसे '**यूनिवर्सल स्कैनर**' कहते हैं। इस यंत्र की मदद से मनुष्यों, पशुओं, पेड़–पौधों तथा वस्तुओं की सात्विक ऊर्जा (आभा मंडल) को नाप कर अपने शोधपत्र "The positive cow energies" में बताया है कि सामान्यतः मनुष्य का आभामंडल 2.5 मीटर, स्वदेशी गाय का आभामंडल 4.5, गाय के घी का 14 मी., गोमूत्र का 8.9 मी. तथा गोबर का 6 मी. होता है।

यू.एन.ओ. की फूड एण्ड एग्रीकल्चरल आर्गेनाइजेशन (FAO) की एक अध्ययन रिर्पोट के अनुसार भारतीय प्रजातियों का गोवंश पाश्चात्य देशों की प्रजातियों के गोवंश से श्रेष्ठ है।

**पंचगव्य** – देशी गायों के मूत्र की उपयोगिता सर्वसिद्ध है। इसे सदा ही पवित्र माना गया है। नवीन वैज्ञानिक परीक्षणों से भी ज्ञात हुआ है कि गोमूत्र रोग प्रतिरोधी व प्रजनन क्षमता को बढ़ाता है। देशी गाय के मूत्र तथा गोबर में अनेक औषधीय गुण होते हैं तथा गोबर सदा गंध रहित होता है। देशी गाय के दूध, दही, मक्खन, घी, गोमूत्र तथा गोबर से विभिन्न प्रकार की औषधियां बनती हैं जो मानव के लिए अनुपम तथा असाध्य रोगों की अचूक दवा मानी जा रही हैं।

भिलाई के शंकराचार्य इंजीनियरिंग कॉलेज के मैकेनिकल विभाग के एक दल ने कोल्हू तकनीक से विद्युत उत्पादन इकाई तैयार कर ग्रामीण भारत के लिए एक उपयोगी यंत्र उपलब्ध करवाया है। इस यंत्र के माध्यम से बैल के एक घंटे की मेहनत से 5 घंटे 40 मिनट की बिजली पैदा की जा सकती है। एक घंटे में तैयार हुई बिजली से एक हाफ एच.पी. पंप को 5.40 मिनट तक चलाया जा सकता है। इससे 14 हजार लीटर पानी निकाला जा सकता है। इसके अलावा इससे उत्पन्न बिजली से अन्य घरेलू कार्य भी सम्पन्न किए जा सकते हैं। इस बिजली संयंत्र को बनाने में 23 हजार रुपये लागत आती है और यह प्रदूषण मुक्त यंत्र है।

अमरीकी वैज्ञानिक डॉ मैकपर्सन के अनुसार गोबर के समान सुलभ कीटनाशक द्रव्य दूसरा कोई नहीं है। इटली के

वैज्ञानिक जी.ई बिगेड ने सिद्ध किया है कि गोबर से मलेरिया के कीटाणु मरते हैं। मद्रास के डॉ. किंग ने गोबर की हैजे के कीटाणुओं को मारने की शक्ति देखकर दूषित जल को गोबर मिलाकर शुद्ध करने की सलाह दी है। **सांप या बिच्छु काट ले तो मरीज को गोबर रस पिलाने तथा उसका लेप करने से विष नष्ट हो जाता है। रूसी वैज्ञानिकों के अनुसार आणविक विकिरण को रोकने में गोबर से पुती दीवारें सक्षम हैं।**

गाय पूरे विश्व की माता है। इसलिए नहीं कि केवल दूध से सब को पालती है, बल्कि उससे मिलने वाले अन्य पदार्थ भी हमारी कृषि व ऊर्जा आवश्यकताओं के लिए उतने ही महत्वपूर्ण हैं। गाय के गोबर से बायो गैस बनाई जाती है जिसमें 55–65 प्रतिशत मीथेन, 34–54 प्रतिशत तक कार्बनडाइआक्साइड,

**जलवायु परिवर्तन के कारण पूरे विश्व के सामने सबसे बड़ा संकट खाद्य सुरक्षा को लेकर पैदा होगा और इसका समाधान भारत की पुरानी देसी नस्ल की गायों में निहित है। वैज्ञानिकों का कहना है कि देसी नस्ल की गायों की जैविक संरचना इस प्रकार की होती है कि वे अधिक तापमान को आसानी से झेल लेतीं हैं।**

अल्प मात्रा में हाइड्रोजन सल्फाइड व नमी होती है। यदि हम कार्बनडाइआक्साइड को बायोगैस से निकाल देते हैं तो इसे सीएनजी सिलेण्डर में उच्च दाब 200 कि.ग्रा. वर्ग से.मी. पर भरा जा सकता है। आई.आई.टी. दिल्ली ने बायोगैस से कार्बनडाइआक्साइड, हाइड्रोजन सल्फाइड व नमी को बाहर निकालकर उसे उच्च दाब पर भरने की प्रौद्योगिकी विकसित की है जिससे वाहन चलाये जा सकते हैं। राजस्थान गो सेवा संघ, दुर्गापुरा, जयपुर में यह संयंत्र पिछले कई वर्षों से सुचारू रूप से चल रहा है तथा पूरी दुनिया से लोग इसे देखने आते हैं। यहां पर बायोगैस से सिलेण्डर भर कर एक सामान ढोने वाला रिक्शा चलाया जाता है। यहां पर बायोगैस से बिजली भी पैदा की जाती है। जिसे गौशाला के काम में लाया जाता है।

हरियाणा के करनाल स्थित नेशनल रिसर्च इंस्टीट्यूट का एक अध्ययन भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के एक अंक में प्रकाशित हुआ है जिसके अनुसार गाय के घी में वैक्सीन एसिड, ब्यूटिक एसिड, बीटा कैरोटीन जैसे माइक्रोन्यूटी एन्टस होते हैं। इसमें शरीर में पैदा होने वाले कैंसरीय तत्वों से लड़ने की क्षमता होती है।

**कृषि में अग्निहोत्र का महत्व** – होमोथेरपी (अग्निहोत्र) अति प्राचीन वैदिक विज्ञान, औषध शास्त्र, कृषि शास्त्र और मौसम आदि विज्ञान द्वारा मानव को दिया गया स्वर्णिम उपहार है। अग्निहोत्र तांबे के पिरामिड के विशिष्ट आकार वाले पात्र में गाय के थोड़े उपले रख के उसमें थोड़ा देशी घी डालकर उसके ऊपर थोड़े चावल डालने के बाद अग्नि प्रज्वलित करके दोनों हाथ जोड़कर सूर्योदय एवं सूर्यास्त के समय किया जाने वाला अग्निहोत्र वातावरण को शुद्ध बनाने में उपयोगी है। गोघृत के हवन से कार्बनडाइआक्साइड के बढ़ते खतरे से बच सकते हैं। प्रदूषित पर्यावरण से पौधों का विकास रुक जाता है। आज सारा पर्यावरण (हवा–पानी–रोशनी) प्रदूषित है। शुद्ध पर्यावरण में ही पौधे विकसित होंगे। जलवायु के साथ जमीन भी रासायनिक खाद और जहरीली दवाओं से प्रदूषित हुई है। अग्निहोत्र द्वारा वातावरण शुद्धि कराके पेड़ों में नई जान आती है, इससे उत्पादन में वृद्धि होती है। कानपुर विश्वविद्यालय एवं पूना विश्वविद्यालय में प्रयोग करके और कई जगह के किसानों ने यह सिद्ध किया है। हर किस्म की भूमि और हर तरह की फसलों में यह लाभदायी सिद्ध हुआ है। अनाज भंडारण में भी अग्निहोत्र संरक्षक साबित हुआ है। यह अंधश्रद्धा का विषय नहीं है, वैज्ञानिक सत्य है। आयुर्वेद में इसके बारे में काफी विस्तार से चर्चा की गई है।

**गाय का घी और हवन** – रूस में ही गाय के घी से हवन करके उसके बारे में अनुसंधान किया गया था। जहां–जहां जितनी दूर तक उस हवन के धुएं का प्रभाव फैला, उतना दायरा किसी भी प्रकार के कीटाणु अथवा वैक्टीरिया के प्रभाव से मुक्त हो गया। कृत्रिम वर्षा कराने के लिए वैज्ञानिक मुख्य रूप से प्रोपलीन आक्साइड गैस का प्रयोग करते हैं। यही प्रोपलीन आक्साइड गैस हमें गाय के घी से प्राप्त होती है। गाय के घी को चावल के साथ मिलाकर जलाने पर अत्यंत महत्वपूर्ण गैसें जैसे– इथलीन आक्साइड, फार्मल्डीहाइड इत्यादि बनती हैं। इथलीन आक्साइड आजकल सबसे ज्यादा उपयोग होने वाली जीवाणु रोधक गैस है, जो आपरेशन थियेटर से लेकर जीवन रक्षक औषध बनाने में उपयोगी है। गोघृत के हवन से कार्बन डॉइआक्साइड के बढ़ते खतरे से बच सकते हैं। आज ही संकल्प लें कि गोमाता के पालन–पोषण तथा रक्षण में हम भरपूर सहयोग देंगे। ऐसा करने के लिए हम अपने तन–मन–धन का प्रयोग करेंगे।

# बिहार ले जा रहे 160 गोवंश मुक्त करवाए गए, आठ तस्कर गिरफ्तार

**वैनी/खलियारी।** मांची पुलिस ने बिहार सीमा पर घेराबंदी कर 8 पशु तस्करों को गिरफ्तार कर उनके कब्जे से 160 गोवंशों को भी मुक्त कराया। पशुओं को तस्करी कर बिहार ले जाया जा रहा था। मौका देख कर दो अन्य तस्कर भागने में कामयाब रहे। जिले की सीमा से पशुओं की तस्करी पर रोक लगाने के लिए एसपी के निर्देश पर पुलिस टीम गत माह (बृहस्पतिवार) सुबह गश्त कर रही थी।

मुखबिर की सूचना पर मांची थाना क्षेत्र की चिकनी घाटी पहाड़ी के पास से घेराबंदी कर आठ तस्करों को पकड़ा गया। वे पशुओं को लेकर जंगल के रास्ते बिहार जा रहे थे। बरामद पशुओं में 63 गायें, 22 बैल, 34 बछड़ा, 41 बछियां शामिल हैं। पकड़े गए तस्करों की पहचान मांची के चिचलिक गांव निवासी राजकुमार यादव, रामपुर बरकोनिया थाना क्षेत्र के करौदिया निवासी प्रमोद कुमार, संतोष कुमार गौड़, निरंजन सिंह, जग प्रसाद गौड, विनोद यादव, श्रवण कुमार, मुनेश्वर धांगर के रूप में हुई। पूछताछ में उन्होंने अपने दो साथी मांची के सोमा गांव निवासी संतोष कुमार धांगर और छविनाथ उर्फ छवि यादव के बारे में बताया।

दोनों मौके से फरार हो गए थे। पुलिस ने आरोपियों पर पशु क्रूरता अधिनियम के तहत केस दर्ज कर जेल भेज दिया। सोनभद्र की सीमा झारखंड और बिहार से भी होकर गुजरती है। पहाड़ी और जंगल वाले इलाकों का फायदा उठाकर तस्कर गोवंश की तस्करी करते हैं। हाल ही में पुलिस ने इन पर सख्ती बरतना शुरू कर दिया है।

## अद्भुत सांड़

उत्तर प्रदेश के हापुड़ में मौजूद **गोरख** नाम का एक सांड़ बेहद खास है। इस सांड़ को देखने के लिए लोग दूर–दूर से आते हैं। विक्की डोनर की तरह कुछ लोग गोरख को **सुपर डोनर** भी कहते हैं। सुपर डोनर के पीछे की वजह ये है कि गोरख के सीमेन से अब तक हजारों देसी गायें जन्म ले चुकी हैं।

# गो सेवकों-गो रक्षकों की छत्तीसगढ़ मुख्यमंत्री से भेंट

**रायपुर (छत्तीसगढ़)।** विश्व हिन्दू परिषद, गोरक्षा विभाग के केन्दीय पदाधिकारी और अन्य गोरक्षकों/गोसेवकों ने गत माह छत्तीसगढ़ राज्य के मुख्यमंत्री मा. विष्णु देव साय जी से भेंट की। कार्यकर्ताओं ने उनका अंगवस्त्र ओढ़ा कर सम्मान किया। भेंट करने वालों में गोरक्षा विभाग के पूर्व केन्द्रीय मंत्री उमेश पोरवाल जी, चन्द्रमणि जी, अखिल जैन जी सहित अनेक कार्यकर्ता शामिल थे। कार्यकर्ताओं ने मुख्यमंत्री से मांग की कि क्षेत्र में गोवंश से संबंधित सभी समस्याओं का समाधान अतिशीघ्र किया जाय। साथ ही गोसेवा आयोग के अध्यक्ष की नियुक्ति तत्काल की जाय जिससे उसके माध्यम से गोवंश संरक्षण–संवर्धन की दिशा में तुरंत कार्य किया जा सके।

गोवंश को बचाने के लिए राज्य के कानूनों को शक्ति से लागू किया जाये ताकि गोवंश हत्या और गोवंश तस्करी को अविलंब रोका जा सके। क्योंकि राज्य की सीमा कई अंतर्राज्यीय सीमाओं से जुड़ी हुई है जहां से दिन–प्रतिदिन गोवंश हत्या और गोवंश तस्करी की घटनाएं लगातार सामने आती हैं। इसके अलावा गोरक्षक लगातार प्रसाशन के सहयोग से गोवंश को बचाते रहते हैं, लेकिन गोरक्षकों के सामने योजनाबद्ध ढंग से अनेक प्रकार की समस्याएं पैदा की जाती हैं, उनको डराया– घमकाया भी जाता है। इसलिए उनको सुरक्षा के साथ ही अन्य सभी सुविधाएं दी जायें।

## सेवा

एक संत ने एक विद्यालय शुरू किया, जिसका उद्देश्य ऐसे संस्कारी युवक–युवतियों का निर्माण करना था, जो समाज के विकास में सहभागी बन सकें। एक दिन उन्होंने अपने विद्यालय में एक वाद–विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया। विषय था, **'जीवों पर दया एवं प्राणीमात्र की सेवा।'** निर्धारित तिथि को प्रतियोगिता आरंभ हुई। किसी छात्र ने सेवा के लिए संसाधनों की महत्ता पर बल देते हुए कहा कि हम दूसरों की तभी सेवा कर सकते हैं, जब हमारे पास उसके लिए पर्याप्त संसाधन हों। वहीं कुछ छात्रों की यह भी राय थी कि सेवा के लिए संसाधन नहीं, भावना का होना जरूरी है। सभी ने मजबूती से अपनी बात कही।

आखिर में जब पुरस्कार देने का समय आया तो संत ने एक ऐसे विद्यार्थी को चुना, जो मंच पर बोलने के लिए ही नहीं आया था। यह देखकर अन्य विद्यार्थियों और कुछ शैक्षिक सदस्यों में रोष के स्वर उठने लगे। संत सबको शांत कराते हुए बोले, 'प्यारे छात्रो, आप सबको शिकायत है कि मैंने ऐसे विद्यार्थी को क्यों चुना, जो प्रतियोगिता में शामिल ही नहीं हुआ था। दरअसल, मैं जानना चाहता था कि हमारे विद्यार्थियों में कौन सेवाभाव को सबसे बेहतर ढंग से समझता है। इसीलिए मैंने प्रतियोगिता स्थल के द्वार पर एक घायल गाय को रख दिया था। आप सब उसी द्वार से अंदर आए, पर किसी ने भी उस गाय की ओर आंख उठाकर नहीं देखा। यह अकेला प्रतिभागी था, जिसने वहां रुक कर उसका उपचार किया और उसे सुरक्षित स्थान पर छोड़ आया।''

संत ने आगे कहा, 'हमें समझना है कि सेवा–सहायता वाद–विवाद प्रतियोगिता का विषय नहीं, जीवन जीने की कला है। जो अपने आचरण से शिक्षा देने का साहस न रखता हो, उसके भाषण पुरस्कार पाने के योग्य नहीं हैं।'

# अब गोवंश तस्करी में पकडे गये वाहन तीन माह तक रहेंगे जब्त

**अमरावती** – राज्य में गोवंश हत्या प्रतिबंधक कानून लागू रहने के बावजूद भी कई लोगों द्वारा कटाई हेतु गोवंशीय प्राणियों की विविध तरह के वाहनों के जरिए अवैध तरीके से तस्करी की जाती है। इनके खिलाफ छापामार कार्रवाई करते हुए पुलिस द्वारा ऐसे वाहनों को पकड़ा जाता है व बरामद किये गये गोवंशीय प्राणियों को गोरक्षण संस्थाओं में भेजा जाता है। ऐसी कार्रवाई में पकडे जाने वाले वाहनों के परमिट को तीन माह के लिए रद्द कर दिया जाता है। परंतु कई बार ऐसे वाहन पुलिस थानों से छुड़ा लिये जाते हैं। जिनका दोबारा ऐसे ही कामों के लिए प्रयोग किया जाता है।

इस बात के मद्देनजर अब अमरावती प्रादेशिक परिवहन कार्यालय ने गोवंश तस्करी के मामलों में पकडे जाने वाले वाहनों को ३ माह यानी 90 दिनों तक संबंधित पुलिस थानों में ही खड़ा रखने का आदेश जारी किया है। जिसके चलते अब गोवंश तस्करी के मामले में पकडे जाने वाले वाहन पूरे तीन माह तक सरकार के पास जब्त रहेंगे और इस दौरान ऐसे वाहनों को किसी भी सूरत में पुलिस थानों से छोडा नहीं जाएगा।

उल्लेखनीय है कि, गोशाला महासंघ (महाराष्ट्र) की विदर्भ प्रांत शाखा द्वारा विगत दिनों राज्य के उपमुख्यमंत्री व गृहमंत्री देवेंद्र फडणवीस के नाम ज्ञापन सौंपते हुए गोवंश तस्करी के मामलों में पकडे जाने वाहनों को सरकार के पास जप्त करने की मांग की गई थी। साथ ही ऐसे मामलों की सुनवाई जलदगति न्यायालय में करते हुए गोवंश तस्करों को जमानत नहीं देने का निवेदन भी किया गया था। तदुपरान्त उपमुख्यमंत्री कार्यालय से मिले निर्देशों के चलते अमरावती आरटीओ कार्यालय ने अमरावती जिले के विविध पुलिस थानांतर्गत तीन माह हेतु परमिट निलंबित किये गये वाहनों की सूची जिलाधीश कार्यालय को सौंपी गई है।

साथ ही जिलाधीश कार्यालय के जरिए सभी संबंधित पुलिस थानों से उक्त वाहनों को 90 दिन के लिए पुलिस स्टेशन में डिटेन किये जाने की कार्रवाई से संबंधित रिपोर्ट भी मांगी गई है। आरटीओ कार्यालय की ओर से जारी इस आदेश के चलते गोवंश तस्करी के मामलों में लिप्त रहने वाले लोगों में अच्छा खासा हडकंप व्याप्त है।

Dr. Aastha Pathak

# GOVANSH HATYA - ARTICLE 48

Article 48 of the Constitution of India is one of the Directive Principles which directs the state to make efforts for banning animal slaughtering of cows and calves and other milch and draught cattle. It further states to organise agriculture and animal husbandry on modern and scientific lines.

## Directive Principle

Article 48 is included as a "Directive Principle of State Policy", meant to guide the Indian states in policy formation and its implementation, but could not be enforced in any court.

All the states administered by the Government of India shall take measures for preserving and improving the breed.

The state administration shall make necessary arrangements to re-organize agriculture and animal husbandry on modern and scientific lines.

The state shall endeavour to prohibit slaughtering and smuggling of cattle, calves and other milch and draught cattle.

The state shall take necessary actions to control trade of cattle in livestock markets for purposes of inhuman slaughter.

The State shall endeavor to protect and improve the environment and to safeguard the forests and wildlife of the country.[5]

The states shall prevent slaughtering of animals except in recognized and licensed slaughter houses.

States shall prohibit the slaughtering of pregnant animals or animals having offspring less than three months old. Further, the animal which is under the age of three months or has not been certified by a veterinarian that it is in a fit condition to be used commercially, shall not be slaughtered in a licensed house.

## Purpose

The purpose of the Article 48 of the constitution is aimed at protecting Bos Indicus. In view of the persistent demands requested from the related religions, for action to be taken to prevent cattle slaughtering, the government formulated Article 48 for well-being of cattle and to take measures to secure the cattle wealth of India.

## Petition Field

The article 48 was challenged in the Supreme Court of India by butchers, tanners, gut merchants, curers and cattle dealers. The petitions were filed in accordance with fundamentals rights as mandated in (Article 19(1)(g)) and religion (Article 25) which were violated by enforcing the Article 48.

Sanjay Raman "Vidyavachaspati"

# HOW CAN WE DEVELOP ADORATION TOWARDS COWS IN CURRENT GENERATION CHILDREN?

Cows are one of the most revered and significant animals in Hinduism. The cow has been worshipped and respected in Indian culture since ancient times. It is regarded as a sacred animal and a symbol of Mother Earth's generosity and kindness. Cows have played a crucial role in India's history and continue to be an essential part of the country's social fabric. However, in recent times, there has been a significant disconnect between the younger generation and the cow. It is high time and vital indeed to develop adoration towards cows in current generation children to preserve India's cultural heritage and traditions.

The cow is a domestic animal that has been associated with Indian culture for centuries. In Hinduism, the cow is revered as a mother figure, providing nourishment and sustenance to the people. Cows have been considered sacred in India for thousands of years and it is an integral part of Indian culture and traditions. They are believed to be a symbol of wealth, abundance and prosperity and it is customary to offer them to the gods during religious ceremonies and festivals. The cow has always been an essential part of the Indian economy and is often referred to as "Gaumata" or mother cow.

In today's fast-paced world, it has become challenging to maintain the connection between the younger generation

and the cow. The increasing urbanization and industrialization have led to a significant decline in the number of cows in cities and towns. Children today are disconnected from nature and have limited exposure to animals, leading to a lack of understanding and appreciation of the importance of cows especially. Therefore, it becomes necessary to develop adoration towards cows in current generation children to preserve India's cultural heritage and traditions.

One of the ways to develop adoration towards cows in children is through education. Children should be taught about the significance of cows in Indian culture and the role they play in the country's economy. This can be done through school curriculums, where children can learn about the cow's anatomy, the benefits of cow milk and the various products made from cow dung. Additionally, they should be made aware of the ethical treatment of animals and the importance of animal welfare.

Another way to develop adoration towards cows in children is by exposing them to cows and other animals. This can be done through visits to cow shelters and farms where children can interact with cows and learn about their behavior and habits. By spending time with cows, children can develop empathy and understanding towards them, which can help them appreciate their importance in Indian culture. It can also be an excellent opportunity for children to learn about farming practices, including organic farming, which is gaining popularity.

In addition to education and exposure, storytelling can also play a crucial role in developing adoration towards cows in children. Stories are an integral part of Indian culture and have been used for centuries to impart knowledge and values. There are numerous stories and fables related to cows in Indian mythology, such as the story of Lord Krishna, who was a cowherd and would play the flute to call his cows. Such stories can be narrated to children, which can help them develop a deeper understanding and connection with cows.

Another way to develop adoration towards cows in children is by promoting cow-based products. Cows provide numerous products such as milk, ghee, butter, and curd, which have numerous health benefits. Children should be encouraged to consume cow-based products instead of processed food, which is quite unhealthy and can lead to various serious health issues. Additionally, children can be taught about the different products made from cow dung, such as incense sticks, paper and biogas, which are extremely eco-friendly and sustainable.

Finally, the government can also play a crucial role in developing adoration towards cows in children. The government can implement policies that promote the protection and conservation of cows. This can be done by setting up more cow shelters and farms, providing subsidies to farmers who rear cows and ensuring the

ethical treatment of cows in slaughterhouses. The government can also organize awareness campaigns and events to promote the significance of cows in Indian culture and the economy. Additionally, the government can introduce laws that prohibit the mistreatment of cows and promote their welfare.



In conclusion, cows have played a significant role in Indian culture and traditions for centuries. However, the younger generation has become disconnected from nature and animals, leading to a lack of understanding and appreciation of the importance of cows. It is crucial to develop adoration towards cows in current generation children to preserve India's cultural heritage and traditions. This can be done through education, exposure, storytelling, promoting cow-based products, and government policies. By developing adoration towards cows in children, we can ensure the preservation of India's rich cultural heritage and traditions for generations to come.

UPI
BHIM UPI Payments Accepted at
BHARTIYA GOVANSH RAKSHAN SAMVARDHAN PARISHAD
Account Number : 0407201000060910, IFSC Code: PUNB0040710
Scan and Pay using any UPI supported Apps

गोसम्पदा पत्रिका के
सदस्य बनने के लिए
सदस्यता राशि UPI द्वारा
भुगतान कर सकते हैं

# गोरक्षा की ऐतिहासिक घटनाएं

*सदियों तक गाय भारतवर्ष के आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक जीवन का अभिन्न अंग रही हैं। इसलिए राजा और प्रजा अकसर गाय की रक्षा के लिए बलिदान करने के लिए उद्यत रहते थे। भारत का इतिहास इस प्रकार के बलिदानों का साक्षी है। कुछ दृष्टांत देखिये –*

- भगवान राम के पूर्वज राजा दिलीप **नन्दिनी** नामक गाय की रक्षा करने के लिए अपने प्राणों की आहुति देने के लिए तैयार हो गये थे। महर्षि वशिष्ठ ने एक गाय की रक्षा के लिए अनेक कष्ट सहे। महर्षि जमदग्नि ने गाय के लिये अपना सिर कटवा दिया। गाय को वेदों में 131 बार **'अघ्न्य'** कहा गया है। पृथ्वीराज चौहान ने सन् 1192 में अपने साम्राज्य की बाजी लगा दी, किन्तु उनकी सेना ने उन गउओं पर हथियार नहीं चलाये जिन्हें मुहम्मद गौरी ने अपनी फौज के आगे खड़ा कर दिया था।
- छत्रपति शिवाजी ने सन् 1630 में 12 वर्ष की कोमल आयु में बीजापुर नवाब की सल्तनत में अपने प्राणों की बाजी लगा दी थी, जिससे कि वह उस हाथ को काट सकें जिस हाथ ने गोहत्या की थी। गुरु तेगबहादुर ने सन् 1675 में ब्राह्मणों और गउओं की रक्षा के लिए अपने प्राणों का बलिदान कर दिया। सन् 1857 की क्रांति का मुख्य कारण यह था कि कारतूसों में गाय की चर्बी इस्तेमाल की जाती थी। कुछ छावनियों में तो हिन्दुस्तानी सिपाहियों ने अपनी जान का खतरा मोल लेकर ऐसे कारतूसों को इस्तेमाल करने से इंकार कर दिया।
- 17–18 जनवरी 1872 को 64 नामधारी सिखों को गऊ प्रेम की कीमत चुकाने के लिए तोपों से उड़ा दिया गया और एक 12 वर्षीय बालक काका बिशन सिंह को तोप के मुंह पर बांधकर उसके चीथड़े उड़ा दिये गये। नामधारी सिखों के नेता बाबा राम सिंह को अपने 11 शिष्यों सहित देश निकाला देकर रंगून भेज दिया गया। 18 अगस्त 1919 को कटारपुर (हरिद्वार के निकट) के 145 गौभक्तों को कठोर सजायें सुनाईं गईं। 8 को फाँसी की सजा दी गई, 135 को कालापानी की सजा हुई और दो को 7 साल की कैद की सजा दी गई।
- कौटिल्य के अर्थशास्त्र में प्राणियों–पक्षियों की रक्षा के लिए बनाए गए कानूनों का उल्लंघन करने पर मृत्युदण्ड का प्रावधान था।
- भगवान बुद्ध ने अपने उपदेशों में वाममार्गियों के द्वारा की जाने वाली गोहत्या को बन्द करवाया था। अशोक का शासन काल (273–32 ई. पू.) वास्तव में प्राणियों के लिए स्वर्ण युग था। गाय की तो हत्या बहुत दूर की बात है, एक चिड़िया को भी मारने की इजाजत नहीं थी। मुगल बादशाह बाबर ने सन् 1530 में शहजादा हुमायूँ को अपनी वसीयत में सलाह दी थी कि वह गाय की कुर्बानी रोक दे।
- **महर्षि दयानन्द ने सन् 1880 में महारानी विक्टोरिया को गोहत्या के विरोध में एक ज्ञापन देने हेतु हस्ताक्षर अभियान चलाया था।** महात्मा गांधी ने सन् 1925 में कहा था "गोहत्या और मनुष्य की हत्या एक ही सिक्के के दो पहलू हैं।"
- आचार्य विनोबा भावे ने सन् 1951 में कहा था **"गोहत्या पर प्रतिबंध लगाना जनादेश है। उन्होंने बाद में सम्पूर्ण देश में प्रतिबन्ध लगाने के लिए 1976 में आमरण अनशन भी किया था।"**
- **राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ** ने सन 1952 में गोहत्या बंदी कानून बनाने के संदर्भ में संपूर्ण देश में हस्ताक्षर अभियान चलाया और 8 दिसम्बर, 1952 को श्री गुरुजी (गोलवलकर जी) लाला हंसराज गुप्त को साथ लेकर राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जी से मिले और उन्हें पौने दो करोड़ से अधिक हस्ताक्षरों द्वारा समर्थित ज्ञापन दिया। उल्लेखनीय है कि हस्ताक्षर संग्रह पर मुस्लिम और ईसाई बन्धुओं ने भी हस्ताक्षर किये थे।
- **7 नवम्बर 1966 को** दिल्ली के संसद मार्ग पर गोहत्या के विरोध में शातिपूर्ण ढंग से आंदोलन कर रहे हजारों संतों एवं गोभक्तों पर तत्कालीन प्रधानमंत्री के आदेश पर अंधाधुंध गोलियां चलाईं गईं, जिसमें **सैकड़ों निहत्थे संत व गोभक्त मारे गये थे और जो बुरी तरह से घायल हुए थे, प्रशासन द्वारा उनका इलाज कराने के बजाय उन्हें मृतकों के साथ ही ट्रकों में भरकर रिज की निर्जन पहाड़ियों में ले जाकर कथितरूप से जिंदा जला दिया गया था।**
- राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की प्रेरणा व विहिप के सक्रिय सहयोग से **वर्ष 2010 में विश्व मंगल गोग्राम यात्रा निकाली गई।** सम्पूर्ण गोहत्या बंदी कानून बनाने के लिए आठ करोड़ जनता द्वारा हस्ताक्षरित ज्ञापन तत्कालीन महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा पाटिल को सौंपा गया। ***धर्मग्रंथों और महापुरुषों की वाणियों में कहा गया है कि गोहत्या समाज के लिए आत्महत्या के समान है अर्थात् गोहत्या–राष्ट्र हत्या है। – सम्पादक***

"LPC DELHI, DELHI PSO, DELHI RMS, DELHI-6"
Email : gosampada@gmail.com
website : www.vhp.org

Registered No. DL-SW-01/4027/24-26
RNI No. 69508/98 प्रस्तुति : 13–14
प्रकाशन तिथि : 11 अगस्त, 2024

प्रकाशक व मुद्रक राजेन्द्र प्रसाद सिंहल ने रायल प्रेस,
बी 81, ओखला इंडस्ट्रीयल एरिया, फेस-1, नई दिल्ली से मुद्रित कर भारतीय गोवंश रक्षण संवर्धन परिषद् (विहिप)
संकटमोचन आश्रम, सेक्टर-6, रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली-22 के लिए प्रकाशित की। संपादक - देवेन्द्र नायक